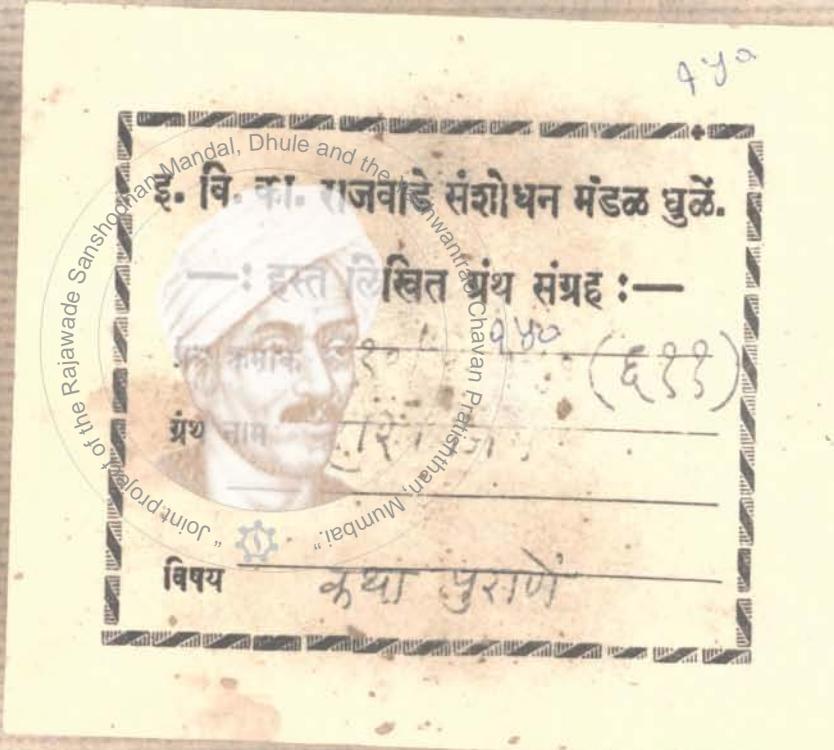


१०/५५८

०५६



गीच्यासुवास्येकरनी॥ वाहिदिव्यगेल्यामेरनि॥ परब्रंशिउरली  
जेध्वनी॥ आदिजननितेचतुं॥ ३२॥ तसुववणजसंस्तुरग॥ तैसेज  
ननीउसेसंसर्वीग॥ पंकजेनवस्तुरन्तरांग॥ अद्यरविबरेगजेसं॥ ३३॥  
सरवनासीकविशाळकावा॥ कणिताटकाचासल्लाळ॥ किंशिरु  
र्वनिर्मल॥ कणियितनीतगल्ला॥ कणिमिलयाशठछेदनि॥ गं  
उस्तुषिदिस्त्रदिपि॥ किंतुकरिति॥ यकास्तुति॥ कणिलगति  
सारद्वयं॥ ३४॥ गकामोवियामो॥ मुक्तकंसुकिशुकवस्त्र॥ आ  
पादमस्तकावरिसमय॥ दिव्यंआवकारशक्तकति॥ ३५॥ आन्तु  
लिहंसासनि॥ दिव्यविनाहातीघउनि॥ जालापकदितामध्युरध्व  
नि॥ लुरवरटकानतटस्ता॥ ३६॥ सुरासुरगणगंधवे॥ स्पिद्धचर

१  
वालिवादे गांधार मण्डल, ध्रुव एवं द्युर्घातना  
प्राचीन प्राचीन प्राचीन प्राचीन प्राचीन प्राचीन

(2)

पासुनिषुवग ॥ अंबेतुसेंचरणिकाव ॥ धरितिसर्वजादेर ॥ ३८ ॥ श्री  
 द्यरनिजकामेकरन ॥ जननितुजम्बूनन्यशरण ॥ जिव्हायंतुराहन  
 हरिविजयग्रथबोलवि ॥ ३९ ॥ गेयोवासरम्भतिचेन्तवन ॥ वदविलं  
 जणदयंकरन ॥ तोङ्गंभानंरुठुरुण ॥ योव्यंचरणवंदुज्ञात ॥ ४० ॥  
 तोङ्गंभानंदपितानिविदि ॥ याचिराकि ॥ तोङ्गादिषुरुष  
 हेंमुक्त्रुक्तुती ॥ मातापिंवा ॥ ४१ ॥ ब्रह्मचर्यग्रहस्ताश्रमक  
 रन ॥ वाणग्रहस्ताजायरन ॥ सदिद्वाच्युतन ॥ त्रीवीधभाश  
 मूलागीलं ॥ ४२ ॥ पंठरियेभीमाताटि ॥ समाधिस्तवालुवंटि ॥ पुर्ण  
 इानिजैसाधुर्जटि ॥ तांपस्त्रियामाजिश्वेष्टै ॥ ४३ ॥ जयासि  
 वाक्पणपासुरि ॥ पवनादिमोत्समान ॥ परद्व्येपाहजैन

Bawade Sanskrit Manuscript Project  
 "Bawade Sanskrit Manuscript Project"  
 "Bawade Sanskrit Manuscript Project"

४४ ॥

(२८)

वसन॥ आनंदघनस्थनपेपें॥ कामादिकपुरुषेरि॥<sup>१७</sup> जेयोलाटा  
 निघातलीबोहरी॥ ज्यान्याह्वपावलाकनेंनिर्धारि॥ इनहायत्रा  
 पियं॥<sup>४५</sup> जेनिन्निमवेदात्तहान॥ तेज्यासीकरत्तलामवपुणीवं  
 दिलेंतयांचरण॥ ग्रंथांकिजाद्॥<sup>४६</sup> उत्तपदस्वीतश्चदा॥  
 साहुंनकान्हीनाहिंवरि॥ वल्लभ सपाववनिष्टं॥ तनिकल्पिलु  
 रविंता॥<sup>४७</sup> मातांपितियासमन्॥ रिल्लणावासहतपुणी॥ तेउप  
 मायेदेकाणनधडंजाणसवध॥<sup>४८</sup> ज्याज्याजन्माजायत्राणी॥  
 तेथेंमायेबोपेजासतीहान्ही॥ परिसहुरकेवल्लेपेदानि॥ तोहुर्लभस  
 वह॥<sup>४९</sup> जनिजानंतपुन्याचियारासि॥ तनिचमटिसहनसीं  
 नहिंतरिवर्थनदहांसी॥ येउनसारथककायेकले॥<sup>५०</sup>



(3)

श्रीगुरवाचुनीयाहोयंशान ॥ हेकावत्त्रैनघोडेष्टुर्णी ॥ अस्त्रा  
 नावाचुन ॥ सुटकानकुंकल्पांति ॥ ५१ ॥ श्रीरामजावतांरपरिष्ठुर्णी  
 तोहिघरिवशिष्टाचंचरण ॥ श्रीष्टद्वाग्रंभसनातन ॥ अनन्य  
 रणसंदिपनी ॥ ५२ ॥ व्यासनान् दास्तिरारणरिघे ॥ ईहवृहस्पतिरें  
 पाईलागे ॥ उमासीवत्तीः ॥ ग ॥ अस्तशानव्रास्ति ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥  
 शुकनारदंप्रलहाद ॥ । वाल्मीकिव सेष्टादिकृषिवंव्य ॥ ईहुकंहि  
 उत्तपदकमछिचाभासाद ॥ क्रन्तुहुनीसवीति ॥ ५४ ॥ उद्धव  
 जागुर्जुनादिकमत्कं ॥ उत्तमजनतरलंबहुता ॥ अपराक्षाशानप्रा  
 स ॥ सहगुरुनवाचुनघोडेना ॥ ५५ ॥ दुग्धित्यनवनितेजासंहंजा  
 बलाव्युजापातजासं ॥ परिसंथनाविनकैस्त्वा ॥ हातिंसापउस्पग  
 पा ॥ ५

Rajaivade Sato Sandhan Mandir Dhule and the Yashkotma  
 "Joint Project of  
 "Jyotirlinga"  
 "Jyotirlinga"  
 "Jyotirlinga"

३A) उर्गंचुगधुसक्षिले ॥ यावधाविकजरिशोधीले ॥ परितेहातव  
ठिकेगरें ॥ नवनित्संपडना ॥ ४७ ॥ जेथेंजेथेंब्राणिवैसन ॥ तेथेंतेथें  
निधानेजासतिबहुत ॥ परिज्ञननननानवालितासय ॥ नसापउतीर्ख  
णिता ॥ ५८ ॥ नेत्रउतमसतेजप ॥ नउगवतावास्यनमणि ॥ जवक्षि  
पदार्थजासेनि ॥ अनदिसंनया ॥ ५९ ॥ तेसोलहुत्सिशारणन  
निधता ॥ जापनोह्यइशाननकाग ॥ यातीगीब्रिंशानंहोतीतत ॥ ६० ॥  
रणजानन्यमिजासें ॥ ६० ॥ श्रीभुजादुसमर्थ ॥ हाजारंभिलोहरि  
विजयग्रंथ ॥ सेवयसिपावायथार्थ ॥ तुङ्यावनदेंकरनिया ॥ ६१ ॥ युम  
घवर्दासिद्याक ॥ तरिचहंग्रंथनापवाटल ॥ साधकचातकटपहातील ॥  
जकिनेबोलबहुहोय ॥ ६२ ॥ मातजाजोकरिप्रतिपाक ॥ तोतोवाठो

लोगं बाल ॥ उन्से दूर पंचिणि वो ल ॥ न बोले वे चिसर्वथा ॥ दृ३ ॥ जो वरिना  
हिं वजवितां ॥ तो पावान वो जसर्वथा ॥ लुब्रधारि न हाल वितां ॥ काहं पुत्र  
नाचना ॥ दृ४ ॥ असेंट को निश्ची उत्तराथा ॥ ल्यणं सिद्धि पाव ल सकले गंथ  
आतां वंदु अते संतो ॥ जे दूर पावत सर्वदा ॥ दृ५ ॥ जे चातुर्थ विचिरले ॥ किं  
शांति मुवनि चिनिधानं ॥ किं कि वति विस्मनं ॥ विकासि लिजाजिरि  
॥ दृ६ ॥ किं तवरा गय जां बहिं च ॥ किं आकृष्य यवी इननं दृचं द्रा ॥  
किं आपरा दृश इन समुद्रा ॥ न ल ॥ को पातं ॥ दृ७ ॥ किं तव्रम गंग-चे  
वो द्य ॥ किं तेस्यानं दृसुरवन्यं मत्तु ॥ जा रंड धार आमधा ॥ वर्षती मुमुक्ष  
चातकं ॥ दृ८ ॥ किं त्रिवर्णाम्तताचं कुमा ॥ किं किरनाचं जाच रखयं  
का ॥ किं तस्मरणा समुद्रा ॥ ध्वज चिपुर्णौ उकारले ॥ दृ९ ॥ किं ते हरि पद  
दृकाचे

Join the Rajawade of Shirodhara, Mandai, Dhule and the Nashwari Chavara Panchayat.  
"Join the Rajawade of Shirodhara, Mandai, Dhule and the Nashwari Chavara Panchayat."

GAS

पद्मीन्द्रं भूमर॥ किंते विवेकमेत्यचिं श्वेगसुंहर॥ किंते ह्यमेचं तत्त्वर  
चिदाकाशिं उचावलें॥ ७०॥ किंते मनन ज्ञानेच्च मिन्॥ किंते क्षुवगजाव  
रिप्त्वानन॥ किंते पद्मर्थाच्च सद्वप्तुगरी॥ निर्मलसीतलसर्वदा॥ ७१॥  
किंते दयनें मांडार॥ किंते उपरति च माहर॥ किं किलिचिजा हाजशोर॥  
कलिसिडं फडेकेवनि॥ ७२॥ ताकिन्यं सायेन सर्वे॥ किंते अंत  
काण्डिन्यं पाटिरारवं॥ वैकुंठनाथ उवाच काका॥ उतोन्ति वै याजवली  
॥ ७३॥ एतं जोंमाहाराजेन्संत॥ उत्तराकुलवरि द्वपावत॥ जदिनवच्छल  
सेवारहित॥ आपपरनणनीजे॥ ७४॥ दवसमानन्त्रणावंसंत॥ हं गोष्ठि  
च जासंमत॥ देवजोसि पलि दरवति सत्य॥ हाति ते सिन्हालुं श्रस्त्रं॥ ७५॥  
जे सेवाकरि तिवहुंत॥ यासउत्तमफलदेत॥ जे भजननकरि तिवथार्थ  
स्वावरि देव कोपंती॥ ७६॥ लासदरि द्वजाणुनि॥ व्राणीयासपी उती

(5) आधः पतनी ॥ तैसीनक्षें संताचिकरणि ॥ समसमानसवीति ॥ ८१ ॥ सर्व  
वरिहयां समान ॥ येक उत्तमये कहिण ॥ हेन देवति च संतपूर्ण ॥ जनवन  
समानत्यासि ॥ ८२ ॥ येकान्वें करावें कुल्यान ॥ नमजें त्यान्वें जाकल्याण ॥ हेन  
वान्वें कडुसुपूर्ण ॥ संतसमानसवीति ॥ ८३ ॥ जैसाकायेचाविकानहोत  
ज्ञें ॥ तैसितैसी छायां दिसें ॥ जापण पता छायावेसें ॥ उठतां उभीतां हा  
ये ॥ ८० ॥ जैसीकाया तैसी छान ॥ प्रकारं देवांचिक्रिया ॥ तैसीनक्षें  
संताचिकरणि ॥ समसमानसवीसि ॥ वरकडुजनासमानसत ॥ एस  
बालतांचिमात ॥ तोंपावें जाधः पतुटुटुद्विदुराभा ॥ ८२ ॥ समुद्रज्याणी  
मैद्वूषिनी ॥ तारंगयोआणीवासरभणी ॥ कांचियाटिजाणिमाहामणी ॥  
मेरमस्यकसमाननक्षें ॥ ८३ ॥ श्रीलक्ष्माणीगोहावनि नाजाजाणिद  
रिद्वि ॥ योगीजाणीदुराव्यासि ॥ केसंसमानहातीपैं ॥ ८४ ॥



Joint Project of  
Santoshchandhan Mandal, Dibrugarh and the Ashram  
of  
Swami  
Chaitanya  
Mahan  
Baba

(54) १९१५  
कसुरिजाणीकोळसा ॥ केशरिजाणीघेंसा ॥ मकुणबायीमहे  
शां ॥ कैसिसमनहोईल ॥ ८५ ॥ सुपर्णजाणीवायेस ॥ पावाणजा  
णीपरिस ॥ बाबुंजजाणीसुरतरस ॥ समानसकाहानहै ॥ ८६ ॥  
तेसंसंतजाणीइतर्जन ॥ जेलनिवित्तिसमान ॥ तोनरदहासियेउं  
न ॥ पशुंजैसामुठपै ॥ ८७ ॥ लासार संतचामाहिमा ॥ वर्षुनद्रक  
विव्रषां ॥ संतसंगचियरु सिमा ॥ नकरवेचिकान्हाते  
८८ ॥ तेसंतमाहाराजसुर्जन ॥ याजुरक्षितयासीनमन ॥ श्री  
वदव्यासजगद्गुष्ठा ॥ याचवृणुपुडाता ॥ ८९ ॥ ज्याचियांसुरव  
कमकापालुन ॥ चिह्नसद्रवलाउर्णी ॥ यावाक्येभान्तेकरन ॥ त्रिज  
गजरुणीधालहां ॥ ९० ॥ किंवेकामुरवाचाब्रह्मदव ॥ किंसाक्षातदि  
बाहुरभाघव ॥ किंवाभाललाचनसदार्थीव ॥ स्वयमवजावतरला ॥ १९१

सम

(6)

तोमाहाराज धर्षा देपायन ॥ जावतरलालोक हिंतालोगुण ॥ निग  
मकमकाविकाश सुंर्ण ॥ व्यासचंडासु दरवतां ॥ १२ ॥ जोवशिष्टाचापय  
दुङ्होयं ॥ इकिचापैत्रनिः ॥ संदोय ॥ तापाराशारसुंतरेंपोहु ॥ मह  
वकोन्हौयूणवि ॥ १३ ॥ अनसताशुकरंतिसुंर्ण ॥ सत्यवतिच्छदयन्ता  
याजगहुतनेंचरंण ॥ ब्रह्मक्षावंदि ॥ १४ ॥ नमुतोवाभिकज्ञाता  
जोशातकोटिग्रथकर्ता ॥ जो नदवपेनांतवतां ॥ रामकथाबोलि  
ला ॥ १५ ॥ ज्योतिर्गात्रिउद्धुरुला ॥ नमुतांस्वामीवस्त्रिष्ठ ॥ ज्ञान  
ज्यात्यंज्ञातीवरिष्ट ॥ द्रांतीह्यमन्नाज्ञानरुजा ॥ १६ ॥ दक्षविरिजण  
एष्विधरिली ॥ रविसमानज्याचिशांतिसिरविलि ॥ कुमडल्लेठ  
नमुमंडणी ॥ कुमाद्युवनेलासाद्यीते ॥ १७ ॥ तोसुंर्यवशिज्ञादिगु  
र्त ॥ जोसिममाजीमाहामन् ॥ ज्योतिर्गुचिव्यासमुनस्तर ॥ रमान

(6A)

अचीआवतरला ॥१८॥ नसुतोंस्वामीसुक ॥ जेयोंजीकिलेंआरिक  
 मादिक ॥ ज्यचेंतपोतेंजबाधिक ॥ तमातंकदुसरा ॥१९॥ ज्योचेंमुख  
 कागवत ॥ प्रगटलादिव्येंगंथ ॥ जोयोउद्धरिलाभ्रमीमनुसुंत ॥ जां  
 गवतधर्मसांगोनि ॥२०॥ बड़तपुराणंषहुतगंथ ॥ द्यातमुणुठरल  
 कागवत ॥ जैसेसक्षात्सु यतक नाथ ॥ तेसाचयंथपुज्यह ॥१  
 जेसोदेवामाजीसहस्रनवन ॥ काह नामाजिजेसासुपर्ण ॥ किंतारंग  
 णामाजिभात्रीनदन ॥ तर्सजावत ॥२॥ ओगियामाजीधरणिध  
 र ॥ किंतापसामाजिपिनाकधर ॥ किनवयहातदिनकर ॥ श्रेष्ठजैसावि  
 राजे ॥३॥ किहरिमाजीहनुमंत ॥ किंबालक्यामाजीभंगिरासुंत ॥ किं  
 शस्त्रामाजीवहातं ॥ मुरव्येजैसमान्यपे ॥४॥ किंजाश्रमांतचतुंर्थाश्रि  
 मसुर्ण ॥ किंद्वेत्रामाजिआनंदवन ॥ किंशस्त्रामाजीसुदवर्ण ॥

दावावे Sanskrit Mantra, Shloka and the Yantra Mantra  
 Project  
 दावावे Sanskrit Mantra, Shloka and the Yantra Mantra  
 Project

(८)

तैसेजाण प्रागवत ॥ १०५ ॥ वनचरामाजीहरिथोर ॥ किंधुर्धर्षमा  
जीरघुविर ॥ किधातुमाजिशातकुंभसुदर ॥ तैसंजाणप्रागव  
त ॥ १०६ ॥ याहिमाजीदशम ॥ कोवच्छेरिलीलाउतम ॥ बोलिला  
व्याससुतपरम ॥ हृष्टतर्युदकं ॥ ३७ ॥ दशमआयीहरिवंश ॥  
मानेकपुराणीच्याकथविश ॥ उल्लेकविमाहाउत्थ ॥ श्री  
द्वच्छलिलामंतपै ॥ १०८ ॥ द्विवामनितार्थी ॥ तोहाहारिविज  
येग्रंथ ॥ दुजानाहीविपरितर्ध ॥ सस्वत्रिवाच्य ॥ १०९ ॥ एकाओतं  
हाँसादर ॥ संपलीयारामआवतार ॥ परिवरिदैयथार ॥ पुन्हा  
मागुतीमाजलं ॥ ११० ॥ कौसचाणुरमुष्टिक ॥ आगवगकशीप्रलं  
वादिक ॥ सुकुपालवक्तदेतदेयनायक ॥ जरास्यदमाजलं ॥ १११ ॥

## वाचि

जरासंदानें वं दिशोऽने ॥ भाटा विस सहस्र राजे पडले ॥ परोभासु न मा  
 जलाष्व के ॥ लोकपि डिले च दुं दीश ॥ ११३ ॥ बाणा सुन का व्यावन क  
 रिति एथ्वी चंकं दन ॥ गाई भ्याणी ब्राह्मण ॥ दाकि ति मातृन दुरासे ॥  
 कोरव दृष्टि माजा ले ॥ राष्ट्रस पुन हजना ले ॥ क छिचं स्वरूप सग के दुं  
 यधिन जाले ॥ ११४ ॥ के रुजा यी क व्यावन ॥ मेडिति ब्राह्मण चिस  
 हैन ॥ जो करि विद्यु अजन ॥ त्याग करि दाकि ति ॥ ११५ ॥ न चाले अत  
 दांन तप ॥ राहि ले रुधी चं ध्यन न ॥ वर्तागले थारपाप ॥ धर कंप  
 जाहाला ॥ ११६ ॥ गाई व्यास्त्वर सधन त्रि ॥ उभी दिक कछि ब्राह्मण चं दा  
 रि ॥ हाक काडुन जाके राकरि ॥ बुडले बुडले लै धूपतो से ॥ ११७ ॥  
 मजन सासवं द सुकांर ॥ पपव तले जापार ॥ सक विद्यु अक दिज



(8)

वर ॥ पितिलेपरमहृषानि ॥ ११६ ॥ ऐस्तिष्ठिभाक्रदत्ता ॥ जव  
 क्षिभालाजगसीतां ॥ यद्विसङ्गेण्टुभातां ॥ चिंतानकरियेंथुनि  
 ॥ ११७ ॥ जेसेप्रजन्यं कालिगंगानेंदुर् ॥ तसेंभालेंनघीचंभार ॥ ब्र  
 लयासीबृणतीविश्र ॥ अनश्चयोरमाडला ॥ १२० ॥ एकस्तपातिका  
 सेंगाजिले ॥ येकमण्टिक ॥ पितिले ॥ येकमण्टियज्ञमा  
 दिले ॥ फोमालुरेंचांडाके ॥ १. ॥ कमण्टिकन्याधरनि ॥ जाम  
 सुरंगेलाघउनि ॥ न्त्रियाक्त्रटनि यादियानि ॥ टसंपापभाव  
 निसवतले ॥ १२२ ॥ आवधयाब्रजायउनि ॥ ब्रह्मयांपुठकरिनिर  
 दन ॥ तोकाल्हाकटकुन ॥ विस्मीतजालापरमेष्टी ॥ १२३ ॥  
 देवासमान ॥ देवांसमवेतसहस्रनयेन ॥ तोहिभालानलागतांहृषण ॥

(84)

वंदिलेंविष्णुपुत्राचेन्वरण ॥ आतीत्रीतितंष्ट्रें ॥ १२४ ॥ तोब्रमास्थण  
 सहस्रनन्दी ॥ जातांजावेंहिरसागरा ॥ गा-हाणोसागावेजगदांद्वारा ॥  
 तरिचकायसाधेल ॥ १२५ ॥ आतंदेष्ट्रपित्रजाजन ॥ सागातंधउनच  
 लुंरानन ॥ हिरसागरीजाउनी ॥ केस्त्वकनकरतिल ॥ १२६ ॥ कैसा  
 हिरसागरिचामाहिमा ॥ काणे दितितपरमाला ॥ सनकादिकविश्रो  
 तम ॥ सुतसागेंकथातचि ॥ १२७ ॥ रहीतिससंगेव्यासनंदन ॥  
 जन्मजयासिसंगेवेसंपायन ॥ चित्राघनतकासंपुर्ण ॥ श्रीधर  
 सागेंश्रोतयां ॥ १२८ ॥ ब्रह्मानंदस्वरपुत्रिश्रात ॥ कथाटकासाव  
 द्यचितें ॥ जेटकतांसमस्त ॥ कलिकिष्मीषदृहनहाती ॥ १२९ ॥  
 इतिश्रीहरिविजयेंग्रथ ॥ समतहरिवंशमागवत ॥ चितुंरस्तंत्र

© Rajawali Sanatan Mandir and the Yasodhara Central Library  
 Digitized by the  
 National Library of India

परिस्तोत् व्रथमोद्यायेगो उहा ॥ ॥ वेक्या ॥ १३० ॥ अाद्या ॥ १ ॥ व्रथम् ॥  
श्रीदृष्टसापर्णीमन्तु ॥ श्रीयेकनाथापर्णमस्तु ॥ श्रीरामदृष्टापर्णमस्तु ॥



जोड़ प्रोड़ राजावाडे सेन्होबान मंडल, धुए और यांत्रिक उपकरण प्राप्ति घर, मुंबई



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)